कृष्णपाल और अवतार गए तेल लेने

फरीदाबाद में तो लोकतंत्र हार की ओर

'रे अम्मा एस दफा वोट दे आइओ वरना फिर से कोई और तेरा वोट डाल देगा मोदी को।' 'अच्छा, ऐसे कैसे डाल देगा मेरा वोट मोदी को कोई ? अपना वोटर कार्ड दिखाते हुए 80 वर्षीय हुकुमादेवी ने कहा कि यो जो मेरा फोटू लाग रा से इसका कोई मतबल नहीं के ? टम्पू करके जाउंगी इस बेर वोट देने। नोटबंदी में इस मोदी ने मेरे थोड़े से पीसे भी मेरे बेटे के हाथ लगा दिए। नास कर दिया एस मोदी ने। अबके बता रे छोरे कि दो हज्जार वाले भी बंद कर देगा यो पगला केसे दिन।'

फरीदाबाद लोकसभा से भाजपा ने अपने खोटे सिक्के वर्तमान सांसद और मोदी सरकार में मंत्री कृष्णपाल गुर्जर पर ही दाँव खेला है, तो वहीं कांग्रेस ने पुराने घाघ दलबदलू अवतार सिंह भडाना पर। अवतार को टिकट देकर जहाँ एक तरफ पार्टी में असंतोष पैदा हो गया वहीं कुछ का मानना है कि अवतार एक पैसे खर्च कर तमाशा लगाने वाला गुर्जर है, इसलिए कृष्णपाल को हराने का पक्का टिकट वही है। आम आदमी पार्टी ने कांव ? लाने ले जाने में स्वयं को पंडित बना कर पेश करने वाले एक्सपर्ट नवीन जयहिन्द को फरीदाबाद से आजमाने का फैसला किया है। पर मतदाता क्या सोच रहा है इसकी ग्राउंड जीरो से विवेक की रिपोर्टिंग 'मजदूर मोर्चा' यहाँ पेश कर रहा है।

सेक्टर-12 फरीदाबाद टाउन पार्क के बाहर नारियल गोले को पानी से भीगा-भीगा कर ताजा रखने की कोशिश करने वाले 19 वर्षीय भोला का चेहरा एकदम मुरझाया और थका हुआ था। भोला से ये पूछने पर कि उनका काम कैसा चल रहा है कुछ देर हमे देखते रहने के बाद बोले आपको क्या लगता है मुझ जैसा एक जवान लड़का अगर पार्क के बाहर गोला नारियल काट कर बेच रहा है तो कैसा काम चल रहा होगा ? आप एक पत्रकार हैं क्या आप इतना समझ सकते हैं कि एक थाली में नारियल बेचना कैसा काम है ? अगर काम बहुत अच्छा चल भी रहा होगा तो क्या कमा पाता होऊंगा मैं ? दिन भर में बमुश्किल 200 से 250 रुपये। कहते-कहते भोला का गला रुंध गया और भर्राई आवाज में बोले मैं एक स्नातक की पढाई करने वाला विद्यार्थी आज मजबूर हूँ वो काम करने के लिए जिसके लिए पढने की जरूरत ही नहीं थी।

भोला के एक-एक शब्द इतने स्पष्ट थे कि उनसे बात करके अंदाजा लगाया जा सकता था कि स्कूल में रटाई जाने वाली इमला को उन्होंने कड़ी मेहनत से याद किया होगा। भोला ने बताया कि यहाँ से पहले वो दिल्ली राजीव चौक पर गोला गरी काट कर बेचा करते थे। 2014 में टीवी के बहकावे में मोदी को अपना नेता चुना और आज हालात ये हैं कि बनारस से निकल कर दिल्ली में नारियल बेचने के बाद यही काम अब फरीदाबाद में करने को शापित हैं।

गरी बेचने पर इतना दु:ख क्यों है उन्हें और मोदी से इतना गिला क्यों ? इसपर भोला ने बताया कि मोदी को वोट देने का एकमात्र कारण उनका यकीन था कि ये जो टीवी वाला पत्रकार मोदी की छवि पेश कर रहा है मोदी बिल्कुल वैसे ही अवतरित होंगे। पर पढाई बीच में ही छोड़ने की मजबूरियों के बाद जब भोला दिल्ली आये और जिन्दगी को टीवी से अलग देखा तो रोना उनकी नियति बन गई। भोला ने बताया कि मुद्रा लोन, और ईज आफ डूइंग की बाते मारने वाले मोदी की दिल्ली पुलिस हर महीने 500 रुपये आज भी वसूलती है भोला जैसे खोमचे वालों से। एनडीएमसी तो उनसे पैसे भी लेती थी और दौड़ा-दौड़ा कर उनकी गरी की थाली भी छीन लेती थी। हर 5 दिन में 150 रुपये की थाली लेना और जो नारियल गिर जाते थे भागते-भागते उसका नुकसान अलग। अपनी थाली के नारियल हटाते हुए भोला ने उसपर लगा स्टीकर दिखाया जो प्रमाण था कि ये एक नयी थाली थी।

ये सब बताते हुए भोला के आंसू उनके गालों पर लुढ़कते रहे। भोला ने कहा कि वो बेशक एक फेरी वाले हैं पर मेहनत से काम कर रहे हैं, और देखो ये पुलिस हमें तो मारती है दौडाती है पर वहीँ चार जेबकतरे दिन भर सबकी जेब काटते हैं और पुलिस उन्हें छूती तक नहीं। यही हैं अच्छे दिन ? क्या मैं भी चोर हो जाऊं ? और फिर भोला के आंसुओं ने आस-पास के तकरीबन सभी लोगों को बेरोजगारों के दर्द की इस टीस पर सोचने को मजबूर कर दिया।

पार्क में ही नियमित सैर के लिए आने वाले 45 वर्षीय नेकचंद राव से हमने जानना चाहा कि इस बार वो किसे वोट देने वाले हैं और किन मुद्दों पर। राव ने बताया कि इस बार तो वो सोचते हैं वोट देने ही ना जाएं। कांग्रेसी अवतार सिंह भडाना को ले आये। इस भडाना का पुराना रिकार्ड है खरीदने और बिकने का। वहीँ कृष्णपाल गुर्जर ने इतने लम्बे वक्त में कुछ काम नहीं किया शहर में। राव ने नाराजगी जताते हुए कहा कि जिस पार्क में आज आप मुझसे ये सवाल-जवाब कर रहे हो इसी पार्क में आपको यदि बरसात में आना हो तो पहुँच कर दिखा दो।

इतना पानी होता है हर जगह कि छोटा बच्चा डूब ही जाए। गाड़ियों की मरम्मत

पर अलग पैसा सिर्फ इस जलभराव के कारण खर्च होता है। तो ये जो मोदी इस

शहर को स्मार्ट बना रहा था क्या ऐसे ही होता है स्मार्ट शहर ? इसलिए सोचता हूँ

कहीं घूमने चला जाऊंगा पर वोट न दूं इस बार।

सेक्टर-22 स्थित ईस्ट इंडिया कालोनी में समस्याओं की बाढ़ सी आई हुई है। आरडब्लूए के प्रधान किशन बारी ने बताया कि ऐसे तो यहाँ एक नहीं हजार समस्यायें हैं पर सबसे बड़ी समस्या पीने के पानी और सीवर ओवरफ्लो की है। लोगो के घरों में सीवर का पानी घुस जाता है। अपनी इन समस्यायों को लेकर हम हर दरवाजे जा चुके हैं पर किसी ने समस्या का निदान नहीं किया। इसलिए इस बार पूरी कालोनी के लोगों ने तय किया है कि मतदान का बहिष्कार करेंगे। प्रधान ने बताया कि इसके लिए उन्होंने सभी राजनीतिक पार्टियों से वोट न मांगने आने की अपील भी की है।

जवाहर कॉलोनी में रहने वाले स्थानीय निवासी सीमा और मुकेश ने बताया कि पीने का पानी तो दूर, कपडे तक धोने का पानी नहीं आ रहा। नल के नीचे बाल्टी लगा दो तो बाल्टी ही झाग से भर जाती है। कई दफा सबके चक्कर काट लिए। अबके जो कोई वोट मांगने आ गया तो वही गंदा पानी पिला कर पूछेंगे कि बताओ कैसा लग रहा है। सीमा ने बताया कि पिछली बार कृष्णपाल को वोट दिया था मोदी के नाम पर। अब जब ये मोदी ही सबका बाप है तो इस कृष्णपाल को क्यों पूछूँ ? मोदी ने केंद्र में कुछ नहीं किया और यहाँ फरीदाबाद में इस गुर्जर ने सिवा हवा बनाने के कुछ नहीं किया। अबके वो आम आदमी पार्टी को वोट देंगी क्योंकि दिल्ली में इन्होंने बहुत शानदार काम किया है।

ब्लुस्टार कंपनी के लिए एयरकंडीशन सर्विस का काम करने वाले विपुल और अतुल फरीदाबाद में तिगांव के नीवासी हैं। विपुल से ये पूछने पर कि किन मुद्दों पर वो इस बार किसी को वोट करना चाहेंगे पर उन्होंने बताया कि सिर्फ और सिर्फ मोदी के नाम पर वो भाजपा को वोट देंगे वरना कृष्णपाल ने ऐसा कुछ नहीं किया है जो इसको दोबारा वोट दें। मोदी के नाम पर सांसद को वोट क्यों ? इसपर अतुल ने कहा कि क्योंकि मोदी ने सेना के लिए बहुत कुछ किया है। क्या किया है ? इस सवाल पर दोनों युवा बगले झांकते मिले। एक ने दायें-बाएं देखते हुए कहा कि एक सैनिक मारने पर मोदी ने पाकिस्तान के 10 मार दिए। तो इसमें हमारी सेना का क्या फायदा ? ऐसे तार्किक सवालों पर दोनों ने खुद को असहज महसूस करते हुए कहा कि वैसे बात तो ठीक है जी आपकी। हम तो चाहते हैं कांग्रेस आ जाए । ऐसा क्यों चाहते हैं, और कांग्रेस में क्या खास बात है ? तो विपुल ने कहा कि कांग्रेस के राज में अगर आप कोई काम करवाना चाहते हैं तो पैसे दे कर हो भी जाता है पर भाजपा के राज में पैसे भी ले लेते हैं और काम भी नहीं होता। उल्टा अगर पैसे वापस मांगो तो उसकी कोई उम्मीद ही नहीं, अतुल ने विपुल की बात से इत्तेफाक रखते हुए कहा कि बिल्कुल ठीक बात है।

सेक्टर-9 फरिदाबाद में परचून की दूकान का काम करने वाले महेंद्र ने बताया कि अपने 60 वर्षों के जीवन में ऐसे धोखेबाज प्रधानमंत्री को नहीं देखा आज तक। पिछले चुनाव में कांग्रेस से परेशान होकर मोदी को चुना था। क्योंकि सारा मीडिया मोदी-मोदी गा रहा था तो हमे भी लगा कुछ तो होगा ही बंदे में। पर क्या मालूम था कि कितना घातक बन्दा निकलेगा ये मोदी। देखो एक काम नहीं किया और अब सेना के नाम पर वोट मांग रहा है। महेद्र ने बताया कि उनका बेटा हनी स्नातक की पढाई पूरी कर चुका है और उसे एक साल से रोजगार नहीं मिल रहा। मैने कहा कि दूकान पर ही आ जा तो उसको लगता है ये उसकी इज्जत के खिलाफ है। मोदी की भक्ति में ऐसा पागल है कि फोन के पीछे फोटो भी लगा रखी है उसकी। अब देख बेटे ये इन्टरनेट ने नए बच्चों को बर्बाद कर रखा है। सारा दिन झूठ चल रहा है और ये बच्चे उसमे फंस गए हैं। इस बार वोट कांग्रेस को दूंगा पर मन मार के।

दवा स्टोर चलाने वाले भूपेंद्र ने कहा कि सेक्टर 9 और 10 में सीलिंग हुई थी। इतना बवाल होने के बाद सबकी रोटी छीन ली गई। अभी कुछ दिन ही हुए हैं कि वही दुकानें फिर से खुल गयीं। अब बताओ ये किस तरह का सिस्टम है ? मोदी ने कहा वो आएगा तो ये होगा वो होगा पर क्या हुआ ? सब वैसा ही चल रहा है। दूकान वालों से पैसे लो और चलने दो। एक दिन कोई नया बन्दा आएगा तो वो भी बंद करा देगा फिर चढावा चढ जाने से वो भी खोल देगा तो बदला क्या।

भूपेंद्र से जीएसटी और नोटबंदी के असर पर उन्होंने बताया कि नोटबंदी तो एक भयानक कदम था। हालाकि जीएसटी से शुरुआत में समस्या आई थी पर अब ठीक है। सिर्फ इतना है कि जो रिफंड होना है वो नहीं हो रहा। महेंद्र ने इस बार कांग्रेस के साथ जाने का मन बनाया है। उन्होंने कहा कि ऐसा वो मजबूरी में कर रहे हैं क्योंकि मोदी एक खतरनाक इंसान है, तो कम खतरनाक को चुनना ही ठीक है। ऐसे ही कई अन्य लोगों की राय में यही निकल कर आ रहा था कि अधिकतर लोग भाजपा से नाराज हैं पर राष्ट्रवाद का मुद्दा नवयुवकों पर काफी हावी है। जो लोग भाजपा से खफा हैं वो कांग्रेस के खेमे में जाने का मन तो बना रहे हैं पर वो भी एक मजबूरी के तहत। फरीदाबाद में अन्य पार्टियों का अस्तित्व कुछ खास नहीं पर हां एक बात जो घोर चिंता का सबब है वो ये कि जो देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है वहाँ राजनेताओं के झूठ और कपट के चलते लोगों का लोकतंत्र से यकीन उठता जा रहा है।

चुनाव आयोग एक तरफ वोट करने की अपील कर रहा है और राजनैतिक दल भी अभिनेताओं से आग्रह स्वरूप वीडिओ डलवा कर जनता को जागरूप करने की कोशिश कर रहे हैं कि वोट दो। पर क्या जनता को लोकतंत्र में विश्वास बनाए रखने की जिम्मेदारी इतना भर कर देने से पूरी हो जाती है।

चुनाव आयोग जहाँ एक तरफ अपनी गरिमा खो चुका है वहीँ नेताओं के बारे में लोगों का मानना है कि यदि आप एक गुंडे हैं तभी राजनीति में आपका भविष्य है। आज सभी पार्टियों में गुंडों की भरमार है। भाजपा के 30 प्रतिशत प्रत्याशी दागी हैं। आतंकी मामलों में जमानत पर बाहर आयी साध्वी प्रज्ञा जैसों को टिकट मिलना लोकतंत्र में जनता के विश्वास की हत्या करने से कम नहीं। आतंकवाद जैसे संगीन जुर्म में जेल काटने वाली प्रज्ञा शहीद हेमंत करकरे का अपमान करे और मोदी से लेकर सभी बढ़े सत्तारूढ़ नेता उसका बचाव करें तो क्या लोकतंत्र जिंदा रह सकेगा ?

चुनाव की यह शुरुआती पड़ताल बताती है कि जिस मताधिकार को पाने के लिए दुनिया के अन्य देशों में क्रांतियाँ तक हो गईं उस मताधिकार ने भारत में अपनी चमक खोने की शुरुआत कर दी है। इसका श्रेय सभी राजनैतिक दलों और सबसे अधिक चुनाव आयोग को जाता है। इसलिए चुनाव होंगे और कोई चुना भी जाएगा पर लोकतंत्र का हारना एकदम तय है क्योंकि आज़ादी के 70 साल और अच्छे दिन के फटे ढोल के बावजूद भोला जैसों के आंसू चौराहों पर गोलागरी बेचते बह जाएंगे और जेबकतरे नेता बन जाएंगे।

धार्मिक पाखंड का राजनीतिक ठगों से घालमेल

कृष्णपाल व अवतार एक ही पाखंडी बाबे के चेले हैं

जनता को बेवकूफ़ बना कर ठगने व लूटने के लिये ये दोनों एक ही बाबा से आशीर्वाद लेते हैं जो जनता को बहकाने में इनसे भी बड़ा कलाकार है, सिद्धदाता आश्रम का पाखंडी 'अधिष्ठाता श्रीमद जगदगुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री पुरूषोत्तमाचार्यजी महाराज'। इसके बारे में 'मज़दूर मोर्चा' पहले भी कई बार प्रकाशित कर चुका है कि इनके पिता सुदर्शनाचार्य इसी शहर के सेक्टर 16 ए के एक मकान में किरायेदार होते थे। इनकी हरकतों से तंग मुहल्ले वालों से रोज़ उनका झगड़ा होता था। झगड़े जब ज़्यादा बढ़ने लगे तो तत्कालीन मुख्यमंत्री भजनलाल ने इन्हें करीब 500 गज़ जगह पहाड़ में रहने को दे दी थी। उसी जगह में उसने अपनी 'कलाकारी' से आज एक विशाल एवं भव्य महल में बदल कर सिद्धदाता आश्रम बना दिया।

जनता में फ़ैले अंधविश्वास का यह एक छोटा सा उदाहरण मात्र है। नेता चाहे कांग्रेसी हों या भाजपाई, सब को अंधविश्वास फ़ैलाने वाले इन पाखंडी बाबाओं की सख्त जरूरत रहती है। इसका सबसे बड़ा लाभ इन नेताओं को यह रहता है कि अपनी सब समस्याओं, दुख, तकलीफ़ों के समाधान हेतु बाबाओं के माध्यम से भगवान की शरण में पड़े रहते हैं। मानो ये बाबा भगवान के एजेंट हैं। इन्हीं एजेंटों द्वारा जनता को बहकाया जाता है कि उनकी ग़रीबी, बेरोजगारी, भुखमरी, बीमारी व अशिक्षा के लिये राजनेता नहीं बल्कि भगवान जिम्मेवार है। भगवान की नाराज़गी दूर करने के उपाय करने के नाम पर ये बाबे जनता को खूब काटते हैं। जनता में बाबों की मान्यता बढाने के लिये नेतागण समय-समय पर इनसे आशीर्वाद लेने पहुंचते रहते हैं जिसका प्रचार माध्यमों द्वारा विज्ञापनों की भांति भरपूर प्रचार किया जाता है। बाबों के बहकावे में आये लोगों को वोट बैंक समझ कर भी आशीर्वाद लेना जरूरी हो जाता है। इस प्रकार से बाबे और राजनेता एक दूसरे के पूरक हैं। जनता को ठगने के लिये दोनों को एक दूसरे की जरूरत रहती है। अपने राजनेताओं से प्रेरित होकर सरकारी अधिकारी भी अपनी ड्यूटी सही ढंग से करने की बजाय ऐसे बाबों की चरणवंदना करना ज़्यादा जरूरी समझते हैं।

- मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फकीर के लिए खीर !

बिचारा गरीब का बेटा!

बनारस में अपने ऊपर बरसवाने के लिए सिर्फ ₹12 करोड़ के गुलाब के फूल ही मंगवा पाया!

इनकी गरीबी और फकीरी देखकर आंख में पानी आ गया!

कूकने वाली कोयलें हैं और जले पेड़ों की ठूंठ है
जो है जितना है मधुर बचन और खुल्ला झूठ है।

शासन की बंदूकों और तोपों का घटाटोप है
विदूषकों का हर हर करता भीषण प्रकोप है।

तमाशा है खल खल हंसी ठट्ठा गाली ताली है
एटम बम के रोमांच वाली संभावित दिवाली है।

झोला उठा कर भाग जाने को विकल फकीर है
विदा करने को बन रहा हलवा जलेबी खीर है।

बोधिसत्व, मुंबई

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06